शोध के लिए विषय की अच्छी समझ होना आवश्यक -डॉ. अजय प्रताप सिंह

हिंदी विवि में शोध प्रविधि एवं कम्प्यूटर अनुप्रयोग पर वक्ताओं के विचार

वर्धा दि. 18 अक्तूबर 2011: शोध एक गंभीर कार्य है और इस कार्य के लिए शोध करने से पहले छात्रों को चाहिए कि वे शोध कार्य के विषय के प्रति सचेत रहे और अपने में उसके प्रति अच्छी समझ विकसित करें, तभी गुणात्मक परिणाम निकल सकते है। उक्त आशय के विचार पूर्वांचल विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग के प्रभारी डॉ. अजय प्रताप सिंह ने रखे। वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में शोध प्रविधि एवं कम्प्यूटर अनुप्रयोग पर चल रही कार्यशाला के पांचवे दिन मंगलवार को बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि अच्छा शोध परिणाम पाने के लिए शोधार्थी को अपने विषय व शोध के उद्देशों के बारे में बेहतर समझ रखनी अनिवार्य शर्त होती है। उन्होंने प्रातिनिधिक सैंपल का चयन और उसके लिए बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में छात्रों को अवगत कराया। कार्यशाला के अगले सत्र में मीडिया चिंतक अशोक मिश्र ने पत्रकारिता के क्षेत्र की चुनौतियां एवं कार्यप्रणाली पर अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि शोध के लिए किये जाने वाले सर्वे की उपयोगिता और समाचार पत्र-पत्रिकाओं में छपने वाली खबरों की विश्वसनियता जॉचने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि अखबार में छपने वाली सारी खबरों व लेखों के चयन के लिए मूल रूप से संपादक जिम्मेदार होता है। विवि के मानव विज्ञान विभाग के प्रो. बी एम मुखर्जी ने शोध के सामाजिक दृष्टिकोण पर प्रकाश ड़ालते हुए कहा कि डेटा संग्रहण करते समय लोगों का विषय के प्रति दृष्टिकोण भी जानना जरूरी है।

विवि के प्रो. रामशरण जोशी ने जमीनी स्तर पर किये जाने वाले शोध व प्रक्रिया की चर्चा की। उन्होंने छात्रों से शोध प्रविधि को लेकर प्रचलित पाश्चात्य विधियों से आगाह करते हुए कहा कि इससे देशी समस्याओं पर किये जाने वाले शोध के सही और सटिक परिणाम निकालना काफी दुष्कर कार्य होता है। उन्होंने कहा कि हाल ही में गरीबी रेखा को मापने के लिए शहरी क्षेत्रों में 32 रूपये और ग्रामीण क्षेत्रों में 26 रूपये कम आय वाले लोगो को गरीबी रेखा में शामिल किया जाना एक गलत शोध का ही परिणाम है। उन्होंने शोध के लिए प्रश्नावली के माध्यम से मिले उत्तरों की पुन: जॉच करने की सलाह छात्रों को दी। प्रारंभ में अतिथि वक्ताओं का स्वागत संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के अध्यक्ष प्रो. अनिल के राय अंकित ने किया तथा संचालन सहायक प्रोफेसर अख्तर आलम ने किया।

बी एस मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी